



འཕགས་པ་སྐྱེན་རས་གཟིགས་ལྷན་བཞེས་པ་ལ་ན་མོ།

Four Arms Awaloketisvara

H.H. the 37th Drikung Kyabgon Chetsang



དཀོན་མཆོག་རིན་ཆེན་གསུམ་གྱི་ཕོ་བོ་ཉིད། །
རྒྱལ་བསྐྱེད་འཛིན་པ་རྒྱལ་བ་ལེ་པད་དཀར་འཆང་།།
དོན་ཀླན་བཟང་ལོ་རྒྱུན་གྱིས་གཟིགས་མཛད་པ། །
ཡིན་པས་རྒྱན་གྲུབ་བསྐྱེད་བརྒྱན་ཞབས་བརྟན་གོལ།

Contents

Foreword

1. Sanskrit	1
2. Tibetan	7
3. Hindi	14
4. English	21
5. Russian.....	26
6. German.....	32
7. Chinese.....	39
8. Spanish.....	45
9. French	50
10. Arabic.....	55

Acknowledgement

Foreword

The practice of Arya Avalokiteshvara, the manifestation of Loving-Kindness and Compassion of the Thousand Buddhas, is very important in this present time. It has great positive energy to transform our society and bring about a state of peace and harmony.

The reciting of the Six-Syllable Mantra of Avalokiteshvara will nurture the blessed equilibrium in the four elements and the environment, purifying our negative forces, and allowing the glory of peace and happiness to shine through this life, and many future lives. With my prayers.

H.H. the Drikung Kyabgon Chetsang
The Blessed One with the name of Gyalwa
Drikungpa.
26 March 2012

षडक्षरहृदयमन्त्रस्य संक्षिप्ता व्याख्या
हितानुशंसा च
—आचार्य किनले, देहरादून

षडक्षरोऽयम्मन्त्र (ओं मणि पद्मे ह्रँ)
आर्यावलाकितेश्वरस्य धारणी हृदयमन्त्रो
निगद्यते । देवभाषासंस्कृते अवलोकितस्यार्थः
दृष्ट इति, ईश्वरस्यार्थो नाथ इति । (संस्कृते
लोकदर्शने इति धातुः अवोपसर्गपूर्वकोऽत्र
प्रयुक्तः क्त-प्रत्ययः कर्मणि प्रयुज्यते,
ईश ऐश्वर्ये इति धातुतः वश्च् प्रत्ययेन
ईश्वरशब्दो निष्पद्यते । ईशितुं शीलम्
अस्य इति ईश्वरः — नाथः । स्वाम्यर्थेऽत्र
ईश्वरः ।) कमलोपमनेत्राभ्यां सर्वसत्त्वानां
मैत्रीकरुणोपायैः प्रज्ञया च दर्शनमित्यर्थः ।
मन्त्रस्यास्य नाना व्याख्याः प्रचलितास्तथापि
शाब्दिकाक्षरार्थदृष्ट्या संक्षेपेण व्याख्याऽत्र
प्रस्तुता ।

ॐ अ उ म इति

षडक्षरहृदयमन्त्रेऽस्मिन् चत्वारः शब्दाः
षडक्षराणि च सन्ति ।

(क)—षडक्षरहृदयमन्त्रस्य शाब्दकार्थः

1. 'ओं' — ओंकार त्यत्र त्रीणि अक्षराणि,
यथा— अ, उ, म इति । अकारोकारसन्धिना
(गुणसन्धिना) ओ इति । ततः हल्
मकारयोगतः 'ओम्' 'ओं' वा इति
प्रणवो वा 'ॐ' इति सिध्यति । अयम्
'ओंकारः' सहस्रबुद्धानां कायवाक्
चित्तसाररूपः । एतदुच्चारण
त्रीण्यक्षराणि (अ उ म)
युगपदभिन्नत्वेनोच्चार्यन्ते । सहस्रबुद्धानां
कायवाक्चित्तैः सहाभिन्नतया महाकारुणिक
—आर्यावलोकितेश्वरस्य परिलक्षको यो वर्तते ।
एतत्साधनया साधकस्य निजकायवाक्चित्तानि
महाकारुणिक — आर्यावलोकितेश्वरस्य
कायवाक्चित्तैः सहाभिन्नत्वेन परिवर्तन्ते ।

2. 'मणि' – मणिरिति रत्नम्— (रत्नं मणिर्द्वयोः इति अमरकोशवचनात् अश्मजाति—
 मुक्तादिरूपश्च । मणिशब्दः मण—शब्दे धातुतः
 इन् प्रत्ययेन निष्पद्यते । हरिन्मणिरपि वा हरिद्वर्ण
 र्णो मणिर्वा । चिन्तामणिरपि ।) मणिसाराथो हि—
 महाकारुणिक —आर्यावलोकितेश्वरस्य हृदयं
 (चित्तम्) हितसुखोत्समैत्रीकरुणाभ्यां युज्यते
 यस्य सर्वसत्त्वेच्छापरिपूरणे सामर्थ्यात्
 सम्यग्मणिना युज्यते सः । एतत्प्रतीकत्वेन
 हृदये स निजकराभ्यां मणिं धारयति यो हि
 उपायं सूचयति ।

3. 'पद्म' – पद्म— श्वेतकमलं पाणौ (हस्ते)
 यस्य स पद्मपाणिः इति । निजवामहस्ते पद्मध
 ारणतया महाकारुणिक—आर्यावलोकितेश्वरः
 पद्मपाणिरभिधीयते । पदगतौ (पद्यते)
 धातुतः औणादिक मन—प्रत्ययेन पद्मशब्दः
 क्लीबलिगो निष्पद्यते । अस्य प्रतीकार्थोऽत्र

ॐ अ षि स ह्ने हुं ॐ

महाकारुणिक—आर्यावलो कितेश्वरस्य
सूर्योपमहृदः (मनसः) किरणानामुदयेन
स्वसहित— सर्वसत्त्वानां पद्मोपमहृदयानि
(मनांसि) विकसन्ति येनाकाशोपममनस्तमांसि
नश्यन्ति । संक्षेपेण 'पद्म' धर्मगतयथाभूतस्व-
वरूपदिग्दर्शनसामर्थ्यवैशिष्ट्येन युज्यते ।
एतत् शान्तिनैर्मल्य—प्रज्ञासूचकं चाप्यस्ति ।

4. 'हूँ' — 'ह्रूं' इत्येतेन महाकारुणिक—
आर्यावलोकितेश्वरस्य गुणसिद्धिसामर्थ्यम—
भिव्यज्यते । तत्सिद्धिसामर्थ्यं युगनद्ध
प्रज्ञोपायेन च प्रदर्श्यते । एतत्प्रतीकत्वेन
स च दक्षिणाहस्ते स्फटिकमालां धारयति,
विशुद्धाध्याशयसूचकमेतत् । स्फटिकमालेयं
प्रज्ञोद्बोधिका तत्सूत्रं चोपायबोधकम् ।
यथोभयमेलनेन माला जायते तथैव
प्रज्ञोपायसंयोगेनार्यावलोकितेश्वरस्य गुणाः
सिद्धयन्ति ।

(ख)– षडक्षरहृदयमन्त्रस्याक्षराथार्थो
हितानुशंसा च—

1. अस्मिन् धारणीहृदयमन्त्रे षडक्षराणि
षड्गतिसूचकानि बोधिचित्तोत्पादाय
प्राथम्येन दुःखस्वभाविषड्गतयश्चिन्तनीयाः ।
एतद्दुःखमूलहेतुरविद्या यदाधारः
षड्मूलक्लेशाः । एतत् षडक्षराणि
षट्क्लेशोद्भूतषड्गतिसूचकानि सन्ति ।

2. षडक्षराणीमानि बोधिचित्तमार्गभूतषट्पार
मिता—दानद्वक्षान्तिवीर्यध्यानप्रज्ञाप्रभृत्यभ्यासा
— वलम्बनानि एतदभ्यस्य
स्वचित्तसन्ततावतारणीयमेतत् ।

3. षडक्षराणीमानि आभ्यन्तरषडिन्द्रिय—चक्षुः
श्रोत्रघ्राणजिह्वाकायमनांसि तथा बाह्य—षडा
यतन—रूपशब्दगन्धरसस्पर्शधर्मान् सूचयन्ति ।
इन्द्रियविषययोगेन योनिशोमनस्कार

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

— (सत्यानुलोमिकनयेनानित्यताया
अनित्यत्वेनावबोधः) अयोनिशोमनस्कारयोः
(अनित्यताया नित्यत्वेन दर्शनम्)
आश्रयेण सविकल्पनिर्विकल्पप्रज्ञोदेति ।
अनयोरेकस्योद्भवः सुखत्वेन दुःखत्वेन
वाभिर्भवति । इमानि संक्षेपतः
षडिन्द्रियविषयक्लेशप्रज्ञाद्वारसूचकानि सन्ति
अथवा संसारनिर्वाणाद्वारसूचकानि सन्ति ।

4. एतत्षडक्षराणां यथावदभ्यासेन
मानवदेवयोनिगतस्य सुखस्यावसरो लभ्यते ।
अनततः षडक्षरात्मकमन्त्रोऽयं षड्बुद्ध
पदप्राप्तिसामर्थ्यं षड्ज्ञानसिद्धिसामर्थ्यं
चाभिधत्ते । प्राप्यफलं चापि सूचयति ।
संक्षेपेण एतद् धारणीहृदयमन्त्रे
बुद्धोपदिष्टचतुरशीतिसहस्रधर्मस्कन्धसारो
निहितो वर्तते ।

॥ भवतु सर्वमंगलम् ॥

མ་ཁི་ཡི་གོ་བྱུག་མའི་འགྲེལ་བཤད།

༡༡། །གཟུངས་སྲགས་མ་ཁི་ཡི་གོ་བྱུག་མ་
 འདི་ནི། འཕགས་པ་སྲགས་ཇི་ཆེན་པོའི་གཟུངས་
 སྲགས་ཡིན། དེ་ཡང་ལེགས་སྐྱུར་ལྟའི་སྐད་དུ་ཨ་
 མ་ལོ་ཀན་ཞེས་པ་སྐྱུན་རས་གཟིགས་དང་། ཨི་ཤ་
 མར་ཞེས་པ་དབང་སྐྱུག་ལ་འདུག་པས་སྐྱུན་རས་
 གཟིགས་དབང་སྐྱུག་ཅེས་བྱ་བ་ཡིན། དེ་ལ་སྐྱུན་
 རས་གཟིགས་ཞེས་པས་ཇི་ལྟར་གཟིགས་ཞེ་ན།
 བརྗེའི་སྐྱུན་གྱིས་ཉེ། སེམས་ཅན་ཀུན་ལ་བྱམས་
 བཅེ་དང་ཐབས་ཤེས་གཉིས་ཀྱི་སྐོ་ནས་གཟིགས་
 པ་ཡིན། གཟུངས་སྲགས་དེར་འགྲེལ་བརྗོད་མང་
 པོ་ཡོད་ཀྱང་། སྐབས་འདིར་ཆིག་དང་ཡི་གའི་སྐོ་
 བས་ཅུང་ཟད་སྐོས་ན། དེ་ལ་ཆིག་བཞི་དང་ཡི་གོ་
 བྱུག་ཡོད།

ཨོམ་ཁི་བརྗེ་རྩེ་མོ་།

དང་པོ་ཚིག་གི་སྒོ་ནས་འཆད་བཤམ་ལ།
ཡིག་འབྲུ་ཨོ་འདི་ལ་ཡི་གེ་ཨ་ཟུ་མ་གསུམ་
ཡོད་བས། ཨ་དང་ཟུ་གཉིས་མཉམ་དུ་སྒོམ་
བའི་ཚེ་ཟུ་འདི་ཉིད་ཨོ་རུ་གྲུར་བས་ཨོ་ཞེས་
གྲུར་བ་དང་། དེ་གསུམ་གྱིས་སངས་རྒྱས་སྟོང་
གི་སྐྱུ་གསུང་ཐུགས་གྱི་སྟོང་པོ་མཚོན་བཤམ་ལོ།

ཨོ་ཞེས་བའི་ཚེ་ཡི་གེ་གསུམ་ག་ཅིག་ཅར་དབྱེར་
མེད་དུ་བརྗོད་བས། འབགས་བ་ཐུགས་རྗེ་
ཚེན་པོ་འདི་ཉིད་སངས་རྒྱས་སྟོང་གི་སྐྱུ་གསུང་
ཐུགས་གྱི་རང་ག་ཐུགས་དབྱེར་མེད་ཡིན་བར་
མཚོན་ཀུས་བཤམ་ལོ། དེ་ཉམས་སུ་ལེན་བས་
སྤྱི་མར་རང་གི་མ་དག་བའི་ལུས་རག་ཡིད་
གསུམ་དེ་ཐུགས་རྗེ་ཚེན་པོའི་སྐྱུ་གསུང་ཐུགས་

ཀྱི་རང་བཞིན་དབྱེར་མེད་ཏུ་འགྱུར་རོ། །

མ་ཎི་ཞེས་པའི་དོན་དེ་ལོར་བྱ་ལ་འཇུག་པ་དང་།
སྒྲིང་དོན་ནི་འབགས་པ་སྤྲུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་འདི་
ཉིད་ཀྱི་སྤྲུགས་ཀར་པན་བདེའི་འབྱུང་གནས་
བྱམས་བཅེ་དང་སྒྲིང་རྗེ་སྟེ། སེམས་ཅན་ཐམས་
ཅད་ཀྱི་དགོས་འདོད་རེ་བ་སྐྱོང་རུས་པའི་ཡང་
དག་པའི་ལོར་བྱ་དང་ལྡན་ཅིང་། དེའི་མཚོན་དོན་
ཏུ་སྤྲུགས་ཀར་སྤྲུག་གཉིས་ཀྱིས་ལོར་བྱ་འཇིན་པ་
ཡིན། དེས་ནི་ཐབས་ཀྱི་ཆ་མཚོན་པ་ཡིན་ལོ།།

བརྗེ་ཞེས་པས་མེ་ཉོག་བརྗེ་ལ་འཇུག་པ་དང་།
སྤྲུག་གཡོན་པར་མེ་ཉོག་བརྗེ་འཇིན་པས་སྤྲུག་
བརྗེ་ཞེས་དང་། དེའི་མཚོན་དོན་ནི་མགོན་པོའི་

ཨོ་མ་ཉི་བརྗེ་རྩེ་མོ་།

ཐུགས་ཀྱི་ཉི་མའི་འོད་ཟེར་ཤར་བ་ན། བདག་
སོགས་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་སྤྲིང་གའི་མེ་ཉོག་
བཞད་པ་དང་། ཡིད་མཁའའི་ལུན་པ་གསལ་བ་
སོགས་མདོར་ན་ཚོས་ཀྱི་རང་བཞིན་གསལ་པོར་
སྟོན་ཀླུས་ཤིང་། ཞི་བ་དང་རྣམ་པར་དག་པའི་
ཁྱད་པར་དང་ལྡན་པས། དེས་ནི་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཆ་
མཚོན་པ་ཡིན།

རྩེ་ཞེས་པས་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོའི་ཡོན་ཏན་མདོན་
པར་གྱུབ་ཀླུས་པ་དང་། དེ་ཡང་ཐབས་ཤེས་ཟུང་
དུ་འབྲེལ་བའི་སྐོན་ས་གྱུབ་ཀླུས་པ་བསྟན་ཅིང་།
དེའི་མཚོན་དོན་དུ་ཐུག་གཡས་པར་ཤེས་དཀར་
ཀྱི་སྤྲིང་བ་འཛིན་པས་ལྷག་བསམ་རྣམ་པར་དག་
པ་མཚོན་ཀླུས་ཤིང་། མདོར་ན་ཤེས་དཀར་གྱིས་

ཨོམ་ཁི་བརྗེ་རྩེ་མོ།

ཁྲིམས། བཟོད་པ། བཙོན་འགྲུམ། བསམ་གཏམ།
ཤེས་རབ་སོགས་ཀྱི་ཉམས་ལེན་ལ་བརྟེན་དགོས་
པ་མཚོན་བྱས་པ་ཡིན།

༣ །དེ་དག་ཉམས་སུ་ལེན་པ་ལ་རང་རྒྱུད་ལ་
རྒྱུར་དགོས་པས། ཡི་གེ་རྒྱག་མ་དེས་ནང་གི་
དབང་པོ་རྒྱག་དང་། ཕྱི་ལྗོངས་མཆེད་རྒྱག་མཚོན་
བྱས་ཤིང་། དེ་ཡང་ཕྱི་ལྗོངས་རྒྱག་ནི། གཟུགས།
རྒྱ། རྩི། རོ། རེག་གྲ། ཚོས་དང་། རང་གི་ལྷུ་ལ་ཅན་
རྒྱག་ནི། མིག་ན་ག། ལྷ། ལྷེ། ལྷས། ཡིད་བཅས་
འཕྲོད་པ་ལས་ཚུ་ལ་དང་ཚུ་ལ་བཞིན་མ་ཡིན་པའི་
ཡིད་ལ་བྱེད་པ་ལ་བརྟེན་ནས། རྩོག་བཅས་དང་
རྩོག་མེད་ཀྱི་ཤེས་རབ་ཅི་རིགས་པ་རྣམས་བ་དང་།
དེ་དག་ལ་བརྟེན་ནས་བདེ་རྒྱུག་གི་རྣམ་པ་ཡང་ཅི་
རིགས་པར་རྣམས་བ་ཡིན། མདོར་ན་དེས་ནི་ཤེས་

རབ་དང་ཉོན་མོངས་ཀྱི་འཇུག་སློབ་ལྟ་བུའམ་ཡང་
 བ། འཁོར་བའམ་སྲུང་ན་ལས་འདས་པར་འཇུག་
 པའི་སློབ་ལྟ་བུ་ཡིན་པར་མཚོན་ཀུས་པ་ཡིན།
 ལ །དེ་དག་ཚུ་ལ་བཞིན་དུ་ཉམས་སུ་ལེན་པས་
 གནས་སྐབས་ལྟ་མིའི་བདེ་བ་དང་། མཐར་ཐུག་
 སངས་རྒྱས་ཀྱི་གོ་བོ་འཕང་དང་། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ག་
 སོགས་མངོན་པར་གྲུབ་ཀུས་པ་ཡིན། དེས་ནི་
 འཐོབ་བྱའི་འབྲས་བུ་མཚོན་ཀུས་པ་ཡིན་ནོ། །
 མདོར་ན་ག་ཟུངས་སྲུགས་འདིར་སངས་རྒྱས་
 ཀྱིས་གསུངས་པའི་ཚོས་ཀྱི་སྤང་པོ་བརྒྱད་ཁྲི་
 བཞི་སྟོང་ཐམས་ཅད་འདུས་པའི་གནད་དམ་པ་
 ཡིན་ནོ།། དགའོ།།

ཨུ་ཀུན་ལེགས་ཀྱིས་སྤྱི་ལོ་ ༢༠༡༠ ཟླ་ ༣ ཚེས་ ༥
 ཉིན།

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

षडक्षर—हृदयमन्त्र की संक्षिप्त व्याख्या एवं
हितानुशंसा
—आचार्य किनले, देहरादून

यह षडक्षर मन्त्र (ओं मणि पद्मे हूँ) आर्य—अवलोकितेश्वर का धारणी हृदयमन्त्र है। देवभाषा संस्कृत में 'अवलोकित' का अर्थ होता है — देखना और 'ईश्वर' का अर्थ है— नाथ। दोनों शब्दों के योग से अवलोकितेश्वर शब्द की सिद्धि होती है। यहाँ 'देखना' शब्द का विशिष्टार्थ है — कमल रूपी चक्षु से समस्त सत्त्वों को मैत्री और करुणा तथा उपाय एवं प्रज्ञा से देखना।

यद्यपि इस मन्त्र की अनेक व्याख्यायें प्रचलित हैं, तथापि यहाँ शाब्दिकार्थ एवं अक्षरार्थ के आधार पर संक्षिप्त

व्याख्या प्रस्तुत की गयी है। इस षडक्षर हृदयमन्त्र में चार शब्द तथा छः अक्षर हैं।

(क)—षडक्षर हृदयमन्त्र का शाब्दिकार्थ—

1. 'ओं' — ओंकार शब्द में तीन अक्षर होते हैं। यथा— अ,उ,म्। अ और उ के सन्धि से ओ, तत्पश्चात् उस में हलन्त मकार का योग करने से ओम् या ओं अथवा प्रणव रूप ॐ की सिद्धि होती है। यह 'ओंकार' हजारों बुद्धों के काय, वाक् तथा चित्त के सार स्वरूप हैं। इसके उच्चारण से तीनों अक्षर (अ उ म्) एक साथ अभिन्न रूप में उच्चरित होता है, जो हजारों बुद्धों के काय, वाक् एवं चित्त के साथ अभिन्न स्वरूप में महाकारुणिक आर्य—अवलोकितेश्वर के परिलक्षित होने का सूचक है। इसकी साधना करने से साधक का अपना काय, वाक् और चित्त महाकारुणिक आर्य —

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

अवलोकितेश्वर के काय, वाक् और चित्त के साथ अभिन्न स्वरूप में परिवर्तित हो जाता है।

2. 'मणि' – मणि अर्थात् चिन्तामणि रत्न। मणि का सारार्थ है— महाकरुणिक आर्य—अवलोकितेश्वर जिनका हृदय (चित्त) हित—सुख के स्रोत मैत्री और करुणा से युक्त हैं। इसी के प्रतीक स्वरूप उन्होंने हृदय में अपने दोनों हाथों से मणि को धारण किये हुए हैं, जो 'उपाय' का सूचक हैं।

3. 'पद्मे' – पद्म अर्थात् पुण्डरीक (श्वेतकमल पुष्प)। अपने बायें हाथ में पद्म को धारण करने से महाकारुणिक आर्य—अवलोकितेश्वर 'पद्मपाणि' कहलाते हैं। पद्म का प्रतीकार्थ है— महाकारुणिक आर्य—अवलोकितेश्वर के सूर्य रूपी हृद्

(मन) की किरणों के उदित होने से स्व सहित समस्त सत्त्वों के पद्म रूपी हृद् (मन) खिलते हैं, जिससे आकाश रूपी मन के अन्धकार दूर होते हैं। संक्षेप में, 'पद्म' धर्म के यथाभूत स्वरूप को स्पष्टतया दर्शाने के सामर्थ्य की विशिष्टता से युक्त है। यह शान्ति, निर्मलता एवं प्रज्ञा का भी सूचक है।

4. 'हूँ— 'हूँ' के द्वारा महाकारुणिक आर्य—अवलोकितेश्वर के गुणों की सुसिद्धि के सामर्थ्य को बतलाया गया है, उस सिद्धि के सामर्थ्य को युगनद्ध प्रज्ञा और उपाय के माध्यम से दिखलाया गया है। इसके प्रतीक स्वरूप उन्होंने दायें हाथ में स्फटिक माला को धारण किया हुआ है जो विशुद्ध अध्याशय का सूचक है। संक्षेप में स्फटिक माला प्रज्ञा का बोधक है और धागा उपाय

ॐ अ षि स ह्ने दुं ॐ

का बोधक। जिस प्रकार दोनों के सम्मिलन से माला बनता है, उसी प्रकार प्रज्ञा और उपाय के मिलन से आर्यावलोकितेश्वर के गुणों की सिद्धि होती है।

(ख)– षडक्षर हृदयमन्त्र का अक्षरार्थ एवं हितानुशंसा—

1. इस धारणी हृदयमन्त्र में षड् अक्षर हैं जो षड् गति का सूचक है। बोधिचित्त के उत्पाद के लिए प्रथमतया दुःख स्वभाव षड्गति का चिन्तन करना चाहिए। इस दुःख का मूल हेतु अविद्या है, जिसका आधार षड् मूलक्लेश आदि हैं। यह षडक्षर षट् क्लेशों से उद्भूत षड्गति का सूचक है।
2. यह षडक्षर बोधिचित्त का मार्ग षट् पारमिता अर्थात् दान, शील, क्षान्ति, वीर्य, ध्यान और प्रज्ञा आदि के अभ्यास की निर्भरता का सूचक है। इस का अभ्यास

कर इसे अपनी चित्त सन्तति में उतारना चाहिए ।

3. यह षडक्षर आभ्यन्तर षडिन्द्रिय अर्थात् चक्षु, श्रोत्र, घ्राण, जिह्वा, काय और मन तथा बाह्य षडायतन अर्थात् रूप, शब्द, गन्ध, रस, स्प्रष्टव्य और धर्म का सूचक है । इन दोनों अर्थात् इन्द्रिय और विषय के योग से योनिशोमनस्कार (सत्यानुलोमिक नय से अनित्य को अनित्य के रूप में देखना इत्यादि) एवं अयोनिशोमनस्कार (अनित्य को नित्य के रूप में देखना इत्यादि) के आश्रय से सविकल्प अथवा निर्विकल्प प्रज्ञा इनमें से किसी एक का उद्भव होता है, जो सुख अथवा दुःख के रूप में प्रकट होता है । संक्षेप में, ये षड् इन्द्रिय एवं विषय क्लेश एवं प्रज्ञा के द्वार अथवा संसार एवं निर्वाण के द्वार का सूचक है ।

ॐ अ षि स ह्ने हुं ॐ

4. इस षडक्षर का यथावत् अभ्यास करने से मनुष्य एवं देव योनि के सुख का अवसर प्राप्त होता है। अन्ततः, यह षडक्षर मन्त्र षड् बुद्धों के पद की प्राप्ति तथा षड् ज्ञान आदि की सिद्धि का सामर्थ्य रखता है। यह प्राप्य फल का सूचक है। संक्षेप में, इस धारण णि हृदयमन्त्र में बुद्ध द्वारा देशित चौरासी हजार धर्मस्कन्धों का सार निहित है।

॥ भवतु सर्वमंगलम् ॥

The Meaning of Om Ma-Ni Pad-Me Hung!

The Mantra “Om Ma-Ni Pad-Me Hung!” is the essence-mantra of Avalokiteshvara, Lord of Compassion. Here the Sanskrit word Avalokan means “to look with a lotus eye”, which also means “to look with a compassionate, wisdom eye” upon sentient beings. Isvara means “Lord”. The Mantra can be defined in many ways, but here we shall focus on two main points, through the words and syllables.

(i) Firstly, the meaning of the words:
The word Om has three syllables Ah, U and Ma. These three represent the Body, Speech and Mind of the Thousand Buddhas. The three syllables are

ཨོཾ་མ་ཎི་པདྨེ་སྐྱོེ།

written together and pronounced as “Om”, and the implication here is that Avalokiteshvara is an inseparable-embodiment of the Body, Speech and Mind of all Buddhas. With this practice one’s deluded body, speech and mind can be transformed into the perfect Body, Speech and Mind of Avalokiteshvara.

The word Mani means “Jewel” or “Wish-fulfilling Gem”, the signification here being that the Avalokiteshvara has a heart of loving-kindness and compassion, ie. the real jewel that fulfills the wishes of all sentient beings. As a symbol, he holds the Jewel at his heart with his two main hands. This is the aspect of “Method”.

“Padme” means Lotus. Avalokitesh

vara holds a Lotus flower in his left hand, meaning that when the sun shines on the lotus it will blossom, darkness will disappear and living beings shall be able to see the nature of reality. The indication here is that when blessings radiate from the Guru, they will dispel ignorance in our minds and allow the lotus of our heart to blossom. It also means peace and purity. This is the aspect of “Wisdom.

The word “Hung” stands for the commitment to accomplish the state of Avalokiteshvara by the union of Method and Wisdom. As a symbol, he holds a Crystal Mala (rosary) in his right hand, which means that with crystal-clear motivation we may accomplish Avalokiteshvara in order to benefit all sentient beings. Crystal represents

ཨོཾ་མ་ཌི་བློ་ལྷོ་ཨཱིཾ་

Wisdom, and the rosary string represents Method.

(ii) Secondly, the meaning of the Six Syllables:

a. In this Mantra there are Six Syllables which indicate the Six Realms of beings. In order to generate a compassionate heart, one needs to reflect upon the nature of suffering in the Six Realms, which is based on the Six Ignorances.

b. In order to develop a heart of Loving-kindness and Compassion the six syllables are applied to The Six Paramitas (The Six Perfections), Generosity, Morality, Patience, Effort, Meditation and Wisdom.

c. This is put into practise by applying our Six Senses. Because we receive knowledge through our senses, and we

ཨོཾ་མ་ཎི་པདྨ་མུང་།

Значение Ом Ма-Ни Пад-Ме Хунг!

Мантра “Ом Ма-Ни Пад-Ме Хунг!” является сущностной мантрой Авалокитешвары, Владыки Сострадания. Здесь санскритское слово Avalokan означает смотреть Лotosовым взглядом, что также означает смотреть глазом мудрости и сострадания на всех живых существ. Esvara означает Владыка. Эта мантра может быть объяснена разными способами. Здесь мы сосредоточимся на двух основных аспектах – объяснение через слова и слоги. Мантра содержит четыре слова и шесть слогов.

(i) Первое – значение слов:

ཨོཾ་མ་ཎི་པ་རྒྱེ་བྷུཾ་

Слово “Ом” содержит в себе три слога: А, Оу и Ма. Эти три знака представляют собой Тело, Речь и Ум тысяч Будд. Три слога пишутся вместе и произносятся как Ом, это означает, что Авалокитешвара является нераздельным воплощением Тела, Речи и Ума тысяч Будд. Этой практикой можно трансформировать свое тело, речь и ум в Тело, Речь и Ум Авалокитешвары.

Слово “Ма-Ни” означает Драгоценность или сокровище, исполняющее желания, значение слова следующее: Авалокитешвара имеет сердце любви-доброты и сострадания, то есть настоящую драгоценность, которая может исполнить желания всех живых существ. Символом это является

ཨོཾ་མ་ཎི་པལྷེ་ལྷོ་ཨུཾ་

Драгоценность, которую он держит двумя руками у сердца. Это аспект Метода.

“Падме” означает Лотос, левой рукой Авалокитешвара держит цветок Лотоса, который означает, что когда светит солнце, распускается лотос, тьма исчезает и можно видеть ясность природы. Это указание на то, что когда сияет солнце благословения Гуру, оно уничтожает неведение нашего ума и распускается лотос нашего сердца. Он также указывает на покой и чистоту. Это аспект Мудрости.

Слово “Хунг” означает решимость или достижение качеств Авалокитешвары путем союза Метода и Мудрости. Символ этого

ཨོཾ་མ་ཎི་པ་རྣེ་འུཾ་

– Мала из Хрусталя (четки) в правой руке, означают достижение Авалокитешвары кристально чистым сердцем для того, чтобы принести благо всем живым существам. Четки символизируют мудрость, и нить символизирует метод.

(ii) Второе – значение слогов:

а. В мантре шесть слогов, которые обозначают Шесть Царств страдающих существ. Для того, чтобы зародить сострадательное сердце, сначала надо размышлять о природе страдания шести царств и так далее, основой которого являются Шесть Неведений.

б. Для того, чтобы развить сердце любви – доброты и сострадания,

ཨི་མ་ཉི་བརྗེ་རྒྱུ་

шесть слогов должны быть применены в практике Шести Парамит (Шести Совершенств): Щедрости, Нравственности, Терпения, Усилия, Медитации и Мудрости.

в. Это происходит через наши Шесть Органов Чувств: глаза, уши, нос, язык, тело и ум, потому что мы получаем знания через органы чувств путем взаимодействия с Шестью Внешними Объектами: формой, звуком, запахом, вкусом, прикосновением и феноменами. Основываясь на чувствах и объектах, мы испытываем счастье или страдание, в соответствии с нашими благими и неблагими деяниями, и это двери к Знанию или Неведению, Нирване или Самсаре.

г. Наконец, это означает Шесть Мудростей и Шесть Будд – это

ཨོཾ་མ་ཎི་པ་རྒྱེ་ཏུཾ་

результат.

Так, в этой небольшой мантре отражено все учение Будды.

Сарвамангалам

Написано Кинлеем по просьбе друзей 7 мая 2010 года. Место: Офис Его Святейшества Дрикунг Кьябгон Четсанга

ཨོཾ་མ་ཎི་པདྨེ་ཧུཎྜེ།

Bedeutung von Om Ma-ni Pad-me Hung!

Das sechssilbige Mani-Mantra ist das Essenz-Mantra des edlen Großen Mitfühlenden. Er wird auch Avalokitesvara genannt, wobei das Sanskrit-Wort Avalokan “mit den Augen umherblicken” bedeutet und Isvara “Mächtiger”. Auf welche Weise blickt er, wenn es heisst, er blicke mit den Augen umher? Es bedeutet, dass er mit Lotusaugen, d.h. mit liebender Güte und Mitgefühl als Methode und mit Weisheit auf alle fühlenden Wesen blickt.

Zu diesem Essenz-Mantra gibt viele detaillierte Erklärungen. Hier nun wird es anhand seiner Wörter und Silben ein wenig ausgeführt. Das Mantra besteht

aus vier Wörtern bzw. sechs Silben.
 (i) Die Erklärung der Wörter Die Keimsilbe “Om” besteht aus drei Silben: Ah, U und Ma. Diese drei Silben symbolisieren die Essenz von Körper, Rede und Geist der eintausend Buddhas. Während man Om sagt, werden die drei Silben gleichzeitig und untrennbar ausgesprochen. Dies zeigt, dass der edle Große Mitfühlende, Avalokitesvara, untrennbar die Verkörperung von Körper, Rede und Geist der eintausend Buddhas ist. Indem wir dies praktizieren, können sich sodann der eigene unreine Körper, die eigene unreine Rede und der eigene unreine Geist untrennbar in die Natur von Körper, Rede und Geist des Großen Mitfühlenden, Avalokitesvara, verwandeln.

“Ma-Ni” bedeutet Juwel und der tiefere

öffnen und die Dunkelheit des Geistes erhellt wird. Kurz gesagt hat [eine Lotusblume] das Potential, die Natur der

Phänomene klar aufzuzeigen und besitzt die besonderen Eigenschaften von Frieden und vollkommener Reinheit. Sie repräsentiert somit den Weisheitsaspekt.

“Hung” weist auf die Kraft der vollkommen verwirklichten Qualitäten des Großen Mitfühlenden und zudem auf die Kraft, sie durch die Verbindung von Methode und Weisheit zu verwirklichen, hin. Um dies zu veranschaulichen, hält [Avalokitesvara] in seiner rechten Hand eine weisse Kristall-Mala. Sie zeigt seine vollkommen reine besondere Motivation. Kurz gesagt symbolisiert der weisse Kristall den Weisheitsaspekt und die Malaschnur

ཨོ་མ་ཉི་བརྗེ་སྐྱེ་

den Methodenaspekt.

(ii) Die Erklärung der Silben

a. Dieses Essenz-Mantra besteht aus sechs Silben und repräsentiert damit die sechs Klassen von Lebewesen. Zur Entwicklung von Bodhicitta sollte man anfangs über die Natur des Leids der sechs Klassen von Lebewesen nachdenken. Die Ursache für dieses Leid ist zu Beginn Unwissenheit. [Das Mantra] veranschaulicht, dass [Leid] auf Grundlage der sechs Wurzel-Kleshas entsteht.

b. Die sechs Silben zeigen die Notwendigkeit, sich auf die Praxis von Bodhicitta selbst, den Pfad der sechs Vollkommenheiten - Freigebigkeit, ethisches Verhalten, Gelassenheit, Tatkraft, Konzentration und Weisheit - zu stützen.

c. Während der Praxis sollte man diese

mit dem eigenen Bewusstseinsstrom verbinden. Durch die sechs Silben werden die sechs inneren Sinneskräfte und die sechs äußeren Sinnessphären aufgezeigt. Und zwar sind die sechs äußeren Sinnessphären sichtbare Körper, Töne, Gerüche, Geschmäcke, Tastobjekte und Phänomene und die sechs inneren Subjekte sind Augen, Nase, Ohren, Zunge, Körper und Wahrnehmung. Aus ihrem Zusammentreffen entsteht, basierend auf richtigem oder falschem Denken, jeweils konzeptuelles oder nichtkonzeptuelles Wissen und wiederum darauf basierend entstehen verschiedene Formen von Glück und Leid. Kurz gesagt kann somit aufgezeigt werden, dass [die Sinneskräfte und -sphären] das Eingangstor zur Weisheit und zu den

ཨོཾ་མ་ཉི་མཱ་ལྷོ་རྒྱུ་མུ་མུ་

Kleshas oder das Eingangstor zum Samsara und zum Nirvana sind.

d. Indem wir diese in richtiger Weise praktizieren, erlangen wir vorübergehend das Glück von Göttern und Menschen; letztendlich können der Rang der sechs Buddhas und die sechs Weisheiten und so fort vollkommen vollendet werden. Somit wird die zu erlangende Frucht aufgezeigt. Kurz gesagt sind in diesem Essenz-Mantra alle 84.000 Dharma-Ansammlungen zusammengefasst, die der Buddha gelehrt hat.

Sarvamangalam.

Dies wurde von Kinley auf Bitten seiner Freunde am 7. Mai 2010 im Büro von S.H. Drikung Kyabgön Chtesang verfasst.

Deutsche Übersetzung: Claude Jürgens (Yeshe Metog), Oktober, 2011

六字大明咒的解釋

陀羅尼咒之六字大明咒，是大悲觀世音菩薩之明咒。梵語中的阿瓦囉間，意指觀世音；亦西瓦兒，意指自在。因此觀世音菩薩又稱自在觀音，而觀世音則意為：以蓮花之眼，用以慈悲與方便智慧二道遍觀一切有情眾生。

此明咒有多種解釋意思，但在此我們著重於字意與文意二方面的解釋。

ཨོཾ་མ་ཎི་པདྨེ་ཧཱུྃ།

一. 字意：

喻 此字在梵語是由「阿鳴瑪」三個字母所組成，而當「阿鳴瑪」三字合在一起發音時，「鳴」音會轉變為「歐」音，所以發音為「喻」。此三個字母（阿鳴瑪或阿歐瑪）意指為三世諸佛身口意之心要。喻字雖由三個字母所組成，但喻字並無三個字的分別，這意指觀世音菩薩之自性，亦與三世諸佛無二無別。若此生依止六明咒努力的實修，其自身未清淨之身口意，於來世將與觀世音菩薩身口意之自性無二無別。

瑪尼 意指如意寶，四臂觀

音前二臂手持如意寶置於心間，意為觀世音菩薩發願利益眾生，置眾生於安樂道之慈愛與悲心，如如意寶一般能滿足一切有情眾生的祈願，亦為方便之道。

瑪尼 意指如意寶，四臂觀音前二臂手持如意寶置於心間，意為觀世音菩薩發願利益眾生，置眾生於安樂道之慈愛與悲心，如如意寶一般能滿足一切有情眾生的祈願，亦為方便之道。

貝美 意指蓮花，觀世音菩薩左手手持蓮花，故亦有蓮花手之稱。指怙主觀世音菩薩之心

ཨོཾ་མ་ཎི་པ་རྒྱེ་རྗེ་ཨུཾ།

如太陽般照耀時，我等一切有情眾生之心亦如蓮花般綻放，消除心之愚痴，顯示法之自性，具有寂靜與無垢二者之特性，亦為智慧之道。

吽 意為觀世音菩薩功德成就之力，觀世音菩薩右手手持水晶念珠，代表增上意樂發心，亦為方便與智慧二道之意。水晶代表智慧，念珠代表方便，此指觀世音菩薩同行智慧、方便二道，有情眾生於心續中亦能升起如觀世音菩薩一般的功德之力。

一. 文意：

1. 六字大明咒之六字，分別意

指六道眾生。欲發菩提心之前，應先了解六道眾生痛苦的自性，痛苦源自於無明，而無明的根源則來自於六根本煩惱。

2. 此六字亦有六度之意，殊勝菩提心之道須依止布施、戒律、忍辱、精進、禪定與智慧等六度。

3. 實修時，自身之內能取根：眼、耳、鼻、舌、身、意，與外能取境：色、聲、香、味、觸、法合一依止此六明咒。因此正知與倒見將升起無分別想與尋思，無分別想與尋思又將升起安樂與苦痛。總而言之，

ཨོཾ་མ་ཎི་པདྨེ་ཧཱུྃ།

六字明咒代表著智慧與愚痴、
輪迴與涅槃之門。

4. 以正知、正念實修此六字明
咒之利益：短暫得享人天之
樂，究竟可證得六智，成就六
佛果位。

簡言之，此陀羅尼咒為佛
陀開示之八萬四千法門之心
髓。

願 吉祥

阿闍黎 棍列 於 2010.03.07 撰
台灣 昆秋拉姆 譯

EL SIGNIFICADO DE OM MA NI PAD ME HUNG

El mantra om ma ni pad me hung es el mantra esencial de Avalokiteshvara, el Señor de la compasión. La palabra sánscrita avalokan significa tener una mirada parecida a un loto, lo que significa tener una mirada de compasión y sabiduría hacia los seres vivos. Ishvara significa Señor. Este mantra puede definirse de muchas maneras, pero aquí nos centraremos en dos aspectos principales: las palabras y las sílabas.

1.-El significado de las palabras

La palabra om se compone de tres sílabas: ah, u y ma. Estas tres letras representan el cuerpo, la palabra y la

ཨོཾ་མ་ཎི་པདྨེ་སྐྱོེ།

mente de mil buddhas. Las tres sílabas al escribirse juntas se pronuncian om, lo que implica que Avalokiteshvara encarna de forma inseparable el cuerpo, la palabra y la mente de todos los buddhas. Con esta práctica se pueden transformar el propio cuerpo, palabra y mente impuros en el cuerpo, palabra y mente de Avalokiteshvara.

La palabra mani significa “joya” o “gema que concede todos los deseos”. El significado aquí es que Avalokiteshvara tiene un corazón de bondad y compasión, que es la verdadera joya que satisface los deseos de todos los seres vivos. Como símbolo sostiene una joya a la altura de su corazón con sus dos manos principales. éste es el aspecto del “método”.

Padme significa loto. Con su mano iz

quierda sostiene una flor de loto, que simboliza el florecimiento de los lotos cuando brilla el sol, es decir que cuando desaparezca la oscuridad podremos ver la naturaleza de la realidad. Lo que aquí se indica es que cuando las bendiciones irradian del maestro, éstas disipan la ignorancia de nuestra mente y florece el loto de nuestro corazón, mostrando también la paz y la pureza. Éste es el aspecto de la “sabiduría”.

La palabra hung representa el compromiso de realizar el estado de Avalokiteshvara mediante la unión del método y la sabiduría. Como símbolo sostiene un mala (rosario) de cristal con su mano derecha, lo que significa que con una motivación clara como el cristal podemos realizar el estado de Avalokiteshvara

ཨོཾ་མ་ཉི་མལྷེ་རྣམས་ཀྱི་ལཱ་ལྷོ་ལྷོ་།

por el bien de todos los seres. El cristal representa la sabiduría y el cordón del rosario representa el método.

2.-El significado de las sílabas

a) En este mantra hay seis sílabas que indican los seis reinos de los seres. Para generar el corazón compasivo, es necesario reflexionar sobre la condición de sufrimiento de los seis reinos, que se fundamenta en las seis ignorancias.

b) Para desarrollar el corazón de bondad y compasión las seis sílabas representan la aplicación de las seis paramitas o seis perfecciones: generosidad, ética, paciencia, esfuerzo, meditación y sabiduría.

c) El mantra se pone en práctica me

ཨི་མ་ཉི་བརྗེ་རྒྱུ་

diante nuestros seis sentidos, puesto que es a través de los sentidos que recibimos el conocimiento y, en función de nuestras acciones correctas o erróneas, experimentamos felicidad o sufrimiento. Por esto son la puerta al conocimiento o la ignorancia, el nirvana o el samsara.

d) Finalmente, el mantra es la aplicación de las seis sabidurías y los seis buddhas. Éste es el resultado.

En su conjunto, en este breve mantra se refleja toda la enseñanza del Buddha. sarvamangalam!

Escrito por Kinley a petición de algunos amigos el 7 de mayo de 2010. Secretaría de S.S. Drikung Kyabgon. Traducido del inglés por Ferran Mestanza.

ཨོཾ་མ་ཎི་པདྨེ་ཧུཎྜེ།

La signification du mantra Om Ma-Ni Pad-Me Hung !

Le mantra « **Om Ma-Ni Pad-Me Hung !** » est le mantra racine d'Avalokitesvara, l'Être Suprême de la compassion. En sanskrit, le terme « Avalokan » signifie « regarder avec un regard pareil à une fleur de lotus », autrement dit « regarder les êtres avec compassion et sagesse ». « Esvara » signifie « Être suprême ». Le mantra peut être expliqué de différentes manières, mais nous l'aborderons ici sous deux perspectives: une approche par les mots puis par les syllabes du mantra.

(i) La signification des mots

Le mot « **Om** » comporte trois syllabes

« Ah, Ou et Ma ». Ces trois caractères représentent le Corps, la Parole et l'Esprit de milliers de Bouddhas. Les trois syllabes furent écrites ensemble et prononcées « Om ». En ce qui concerne le mantra Om Ma-Ni Pad-Me Hung !, cela signifie qu'Avalokitesvara est la représentation indifférenciée du Corps, Parole et Esprit de tous les Bouddhas. A l'aide de cette pratique, notre perception erronée du corps, de la parole et de l'esprit peut être transformée en Corps, Parole et Esprit d'Avalokitesvara.

Le mot « **Mani** » signifie « Joyau » ou « Joyau qui exauce tous les souhaits ». Dans le cas présent, « Mani » renvoie au fait qu'Avalokitesvara possède un cœur empli d'amour et de compassion, étant capable ainsi d'exaucer les

ཨོཾ་མ་ཎི་པ་རྣམས་ཀྱི་ལྷོ་

souhais de tous les êtres sensibles. Avalokitesvara tient symboliquement un joyau au niveau de son cœur avec deux de ses mains, et représente l'aspect de la **Méthode**.

« **Padme** » signifie « lotus » et dans la main gauche d'Avalokitesvara se tient une fleur de lotus. Lorsque le soleil brille le lotus s'épanouit, l'obscurité disparaît laissant place à la nature de la réalité. De la même manière par les bénédictions du Guru, l'ignorance de l'esprit s'estompe et notre cœur s'épanouit en lotus. Le lotus représente aussi la paix et la pureté, il s'agit de l'aspect de **Sagesse**.

Le mot « **Hung** » scelle l'engagement d'accomplir l'état d'Avalokitesvara par l'union de la Méthode et de la Sagesse.

ཨོཾ་མ་ཌི་བཞེ་རྗེ་ཨུཾ་

Avalokitesvara tient dans sa main droite un mala en cristal (un rosaire) symbolisant par la clarté du cristal la motivation d'atteindre la réalisation d'Avalokitesvara afin de pouvoir être bénéfique envers tous les êtres. Le cristal représente la sagesse, et le fil du rosaire la méthode.

(ii) **La signification des syllabes**

a. Dans ce mantra se trouve six syllabes indiquant les **Six Mondes** des êtres. Afin de développer l'amour et la compassion, il nous est nécessaire de contempler la nature des souffrances de ces mondes basée sur les **Six types d'ignorance**.

b. Afin de développer l'amour et la compassion, les six syllabes renvoient aux **Six Paramitas** (ou six perfections) : Générosité, Ethique, Patience,

ཨི་མ་ཉི་བརྗེ་རྣམས་ཀྱི་ལྷོ་མེ་ལྷོ་མེ་

Diligence, Méditation, Sagesse.

c. De plus la pratique s'opère à travers les **Six Consciences**. Nous recevons des informations via nos facultés sensorielles puis nous agissons de manière juste ou non nous conduisant ainsi vers des expériences de bonheur ou de souffrance. Les Six Consciences sont alors considérées comme les portes de la **Connaissance** ou de l'**Ignorance**, du **Nirvana** ou du **Samsara**.

d. Enfin les six syllabes peuvent également représenter les **Six Sagesse**s ou les **Six Bouddhas**, qui sont le fruit. Ces différentes clarifications montrent comment, dans ce très court mantra, la totalité de l'enseignement du Bouddha est présent. Sarvamangalam.

Sandy Hinzelin: Sandy.hinzelin@gmail.com

معنى المنتر " اوم ماني بزم هوم "

منتَر " اوم ماني بزم هوم " هو المنتر الرئيس لأفلكيشفر
 الكائن الأسمى للرحمة • ففي اللغة السنسكريتية تعني
 " أفلكن - النظر بعيني وردة اللوتس " وبمعنى آخر " النظر
 الى الكائنات الحية بحكمة ومحبة " •
 أما " إشفر " فتعني " الرب " • هناك معان عديدة للمنتر
 إلا أننا سوف نحصرها داخل منظورين - عبر الكلمات
 وعبر المقاطع اللفظية •

أ- معنى الكلمات

تتألف " اوم " من ثلاثة مقاطع لفظية أ، او، وم - حيث تمثل
 جسد، كلام، وفكر الاف البُذها • جُمعت هذه المقاطع الثلاثة
 في لفظة واحدة " اوم " مشيرة الى التجسيد الذي لا يتجزأ
 لجسد، كلام وفكر جميع البُذها • عبر هذه الممارسة، يتحول
 جسم، كلام وعقل المرید الواهم الى الجسد، والكلام، والفكر
 الكامل لأفلكيشفر •

تعني كلمة "ماني-الحجر الكريم" أو "جوهرة تحقيق الأمانى" حيث يتدفق فؤاد أفليكتشقرَ محبةً وعطفاً محققاً آمال وإحتياجات جميع الكائنات مثل جوهرة حقيقية • وهو يحمل جوهرة في يديه الاثنتين على مستوى القلب كرمز للطريق •

وتعني كلمة "بم" وردة اللوتس وهو يحملها بيده اليسرى • ما إن تسطع الشمس تفتح زهرة اللوتس وينقشع الظلام فتتمكن عندها الكائنات من رؤية طبيعة الحقيقة • هكذا تُبَدِّد بركات المعلم الجهل من عقولنا وتفتح لوتس القلب • كما تعني أيضاً السلام والنقاوة فترمز لمنهج الحكمة

• أما كلمة "هووم" فترمز للالتزام في تحقيق حالة أفليكتشقرَ المتمثلة بوحدة الطريق والحكمة معاً • ترمز المسبحة البلورية في يده اليمنى الى الدافع النقي لتحقيق حالة أفليكتشقرَ لمنفعة جميع الكائنات • يرمز البلور الى منهج الحكمة وخيط المسبحة الى منهج الطريق •

ب - معنى المقاطع اللفظية الستة

ب ١ - تتألف المنتز من ستة مقاطع لفظية تشير الى عوالم الكائنات الستة • كي تتم تنبئة قلب مفعم بالرحمة، على المرء التفكير في طبيعة أم هذه العوالم الستة التي تركز على أنواع الجهل السمة •

ب ٢ - كي تتد تنمية العطف والرحمة تؤدي المقاطع الستة الى الكمال الستة
الكرم، الاخلاق، الصبر، الجهد، التأمل، والحكمة •

ب ٣ - تقوم الممارسة أيضاً على تطبيقها على الحواس الستة • نحن ندرك عبر هذه الحواس فنقوم بعمل الحق والباطل اللذان ينتجان فرحاً أو ألماً • فتشكل هذه الحواس المدخل للمعرفة أو الجهل، للنرفانا أو لسمسارا •

ཨོ་མ་ཤི་བཟླ་བུ་ལྷོ་

ب٤- أخيراً يتحقق البدها الستة عبر ممارسة الانواع الستة للحكمة.

تنحصر هكذا مجمل تعاليم البدها ال٨٤٥٠٠ داخل هذه المتر الصغيرة. قام كنلي بكتابتها بعد طلب اصدقائه له كما قام داود متى بترجمتها للعربية في ٢٥ اكتوبر ٢٠١٢ - دهرن - الهند.

Acknowledgements

Homage to Gyalwa Drikungpa

It is my great pleasure to extend my hearty thanks to His Holiness the 37th Drikung Kyabgon Chetsang for compassionately blessing me with the transmission of Mani Mantra and empowerment of the Avalokiteshvara, embodiment of the Buddha of Compassion.

My special thanks also go to Prof. Ramshankhar Tripathi, Khenpo Lobsang Thokmed and all the teachers who kindly helped and explained the Mani Mantra during my study at the Central Institute of Higher Tibetan Studies, Sarnath, Varanasi, to Dr. Dharmdhat Chaturvedi (Lecturer in Sanskrit language, C. U. T. S, Sarnath)

ཨོ་མ་ཉི་པ་རྒྱ་རྒྱུ་རྒྱུ་

for helping me with my broken Sanskrit version, Dr. Thinley Ram Shasni (Editor in the Unit of Rare Buddhist Texts, C.U. T. S. Sarnath-Varanasi) for helping with my broken Sanskrit & Hindi version, Genla Ngawang Tsegpa & Acha Rigsang from the Library of C.U.S. T, Varanasi for kindly providing me necessary materials and sources, Genla Tenzin Jampa (Lecturer & Editor, Songtsen Library, Dehradun) for kindly helping with the Tibetan version, Ms. Viktorija Paukova from Latvia for kindly translating into Russian, Ms. Sandy Hinzelin from France for kindly translating it into French, Mr. Ferran Mestanza from Spain for kindly translating it into Spanish, Ani Claude Jurgens from Germany for kindly translating it into German, Ani Konchok Lhamo from

ཨོ་མ་ཉི་པལྷེ་རྒྱུ་

Taiwan for kindly translating it into Chinese, Sri. Utpal Samanta (Ex. Senior Lecturer in Music College, Dehradun) for kindly directing and helping me with the composition of Mani Chanting music, Mr. Vidhu Gairola and Mrs. Sangita Gairola for kind assistances during the composition of the Chant music, Mr. Anit Kumar Sharma, Songtsen Library, for kindly helping me during the input of the scripts, Mr. Daoud Matta from Lebanon for kindly translating in Arabic, Mr. Alexander Dogaev & Ms. Daria Samoylova from Russia, Dr. Konchok Karma from Songtsen Library for helping to design the booklet, and Ms. Konchok Yeshe Khando from Singapore for her kind financial support for the second edition. Without their constant help

ཨོ་མ་ཉི་པལ་སྐྱོང་།

and support, it would not have been possible to bring out this small booklet in its present form. Therefore, with my deepest gratitude and sincere appreciation, I thank you all and once again thank you very much.

May the peace and happiness shine with the glory of loving kindness and compassion!

Kinley Gyaltzen
Dehradun India
5th January 2012



ལྷན་ལྷོད་ཀྱི་ལོ་རྒྱུ་ལ་ལྷན་ལྷོད་ལྷོད། །
ལྷན་ལྷོད་ལ་ལྷན་ལྷོད་ལ་ལྷན་ལྷོད་ལ་ལྷན་ལྷོད་ལྷོད། །
གན་ལྷན་ལྷོད་ལྷོད་ལྷོད་ལྷོད་ལྷོད་ལྷོད། །
ལྷན་ལྷོད་ལྷོད་ལྷོད་ལྷོད་ལྷོད་ལྷོད་ལྷོད། །



ཡོད་ཀྱིས་དཔེ་བུ་ལྷོད་པའི་ལྷོད་ལྷོད། །
སེམས་ལྷོད་ལྷོད་ལྷོད་ལྷོད་ལྷོད་ལྷོད། །
བྱུང་བའི་ལྷོད་ལྷོད་ལྷོད་ལྷོད་ལྷོད། །
ཡོད་ལྷོད་ལྷོད་ལྷོད་ལྷོད་ལྷོད་ལྷོད། །

